अमेरिका के आफ्टर-स्कूल कार्यक्रम

भटकते बच्चों को सहारा

रकीब हुसैन

कहिए, कैसे मिजाज हैं?'' परदेश में भीड़ में से सवाल उछला। मैं अभी-अभी वाशिंगटन, डी.सी. पहुंच कर आव्रजन क्षेत्र से बाहर आकर अपने सामान की तलाश में निगाहें दौड़ा रहा था- पहली बार अमेरिका आया था और इस बात के आसार बेहद कम थे कि यहां कोई मेरा परिचित हो? मैं हैरान होकर आवाज की दिशा में मुड़ा- अधेड़ उम्र के एक साहब मुस्कुराते हुए मेरे सामने खड़े थे। मैं समझ नहीं पाया कि वह मुझे कैसे जानते हैं। पता चला हवाई अड्डे पर काम करते हैं। उन्होंने सामान ढूंढ़ने में मेरी मदद की।

तब मैं यह नहीं जान पाया था कि अमेरिकियों का यही अंदाज है- जन साधारण यूं ही हंसते-मुस्कुराते अपनी समस्याएं खुद ही हल करने का प्रयास करते हैं। विदेश मंत्रालय के यूथ लीडरशिप प्रोग्राम के तहत एक महीने के अमेरिका प्रवास मैं मैंने इस बात को बहुत महत्वपूर्ण पाया-मैंने जाना कि हॉलीवुड फिल्मों, रंगीन पत्रिकाओं और टेलिविजन चैनलों में दिखने वाले अमेरिका का दरअसल कहीं अस्तित्व नहीं है। अमेरिका की भी अपनी छोटी-छोटी समस्याएं हैं: पढ़ाई बीच में ही छोड़ देने वाले बच्चों से लेकर सुविधाहीन बस्तियों तक, नशे से लेकर धार्मिक मतभेदों तक, देश के राजनीतिक घटनाक्रम में युवाओं की अरूचि से लेकर स्कूल से लौटकर घर आने पर कोई काम न होने के कारण भटकाव की राह जाते छात्रों तक। लेकिन इन्हीं झंझटों के बीच बेहतर भविष्य की जद्दोजहद भी चलती रहती है। कई व्यक्ति और समूह ऐसे कामों में लगे रहते हैं। इनसे हर व्यक्ति के लिए अमेरिकिवासियों की चिंता और सरोकार झलकते हैं।

न्यूयॉर्क शहर के सबसे गरीब इलाके हार्लेम और ब्रॉंक्स आपको एक अलग ही दुनिया में ले जाते हैं-संसार की वित्तीय राजधानी वॉल स्ट्रीट के इतने करीब लेकिन उसकी मलाई और कमाई से कोसों दूर। ब्रॉंक्स में मैंने देखा कि लोगों का छोटा सा समूह भी अपनी बस्ती में कितना बड़ा बदलाव ला सकता है। मुझे प्रसन्नमुख-प्रसन्नचित्त युवाओं का वह दल मिला जो ब्रॉंक्स नदी को एक गंदी-छिछली नहर के बजाय इलाके के स्वच्छ हिस्से में बदल रहे हैं। उन्होंने हमें दिखाया कि कैसे स्थानीय पर्यावरण में आया बदलाव पूरे इलाके का इस हद तक उत्साह बढ़ा सकता है कि वहां के निवासियों ने अपनी गाढ़ी कमाई के पैसे खर्च करके खराब हो चली सड़क की मरम्मत करवा डाली।

यह कोई बहुत बड़ा काम नहीं था, न ही स्थानीय प्रशासन को इस पर लम्बा चौड़ा खर्चा करना पड़ता। हां, वहां रहनेवाले थोड़े से लोगों के जीवन पर उसका बहुत असर पड़ेगा।

मैंने युवाओं के लिए काम करने वाले न्यूयॉर्क के सबसे बड़े स्वयंसेवी संगठन पुलिस एथलेटिक लीग का काम देखा जो हर साल 20 पूर्णकालिक केंद्रों में मुफ्त मनोरंजन, शैक्षणिक, सांस्कृतिक और सामाजिक कार्यक्रम

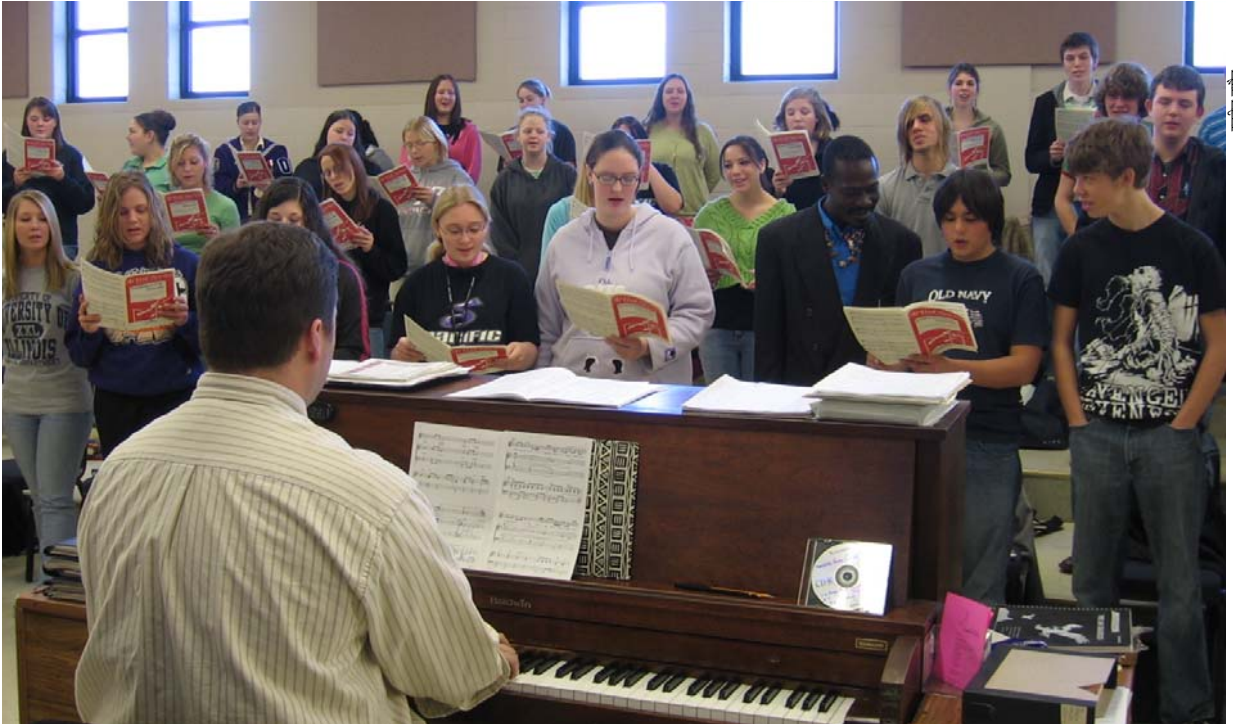

रकीब हुसैन

सेंट लुइस के निकट पैसेफिक, मिसौरी में पैसेफिक हाईस्कूल के छात्र अंतर्राष्ट्रीय आगुंतकों के स्वागत में गीत गाते हुए। कला विषय के विद्यार्थियों को अपना समय कक्षा से बाहर बिताने के विकल्प उपलब्ध होते हैं।

चलाकर शहर के 70,000 किशोर-किशोरियों के जीवन में बदलाव ला रहा है। पुलिस एथलेटिक लीग के हार्लेम केंद्र के सह कार्यकारी निदेशक बॉबी डन बताते हैं कि 90 साल पहले स्थापित इस संस्था का उद्देश्य बच्चों की ऊर्जा को मनोरंजन और खेल के कार्यक्रमों से जोड़कर उन्हें भटकाव से बचाना था। ऐसे संगठन युवाओं को सशक्त ही नहीं बना रहे बल्कि वे अमेरिका की एक ज्वलंत समस्या को भी हल कर रहे हैं। भारत और अन्य विकासशील देशों के विपरीत अमेरिकी स्कूली छात्रों को स्कूल के बाद कोई खास काम नहीं करना होता। बहुत से अमेरिकी परिवारों में मां और पिता दोनों ही नौकरी करते हैं, कुछ परिवारों में मां या पिता में से एक ही होता है जो गुजारे के लिए दो नौकरियां करता है। कभी-कभी माता-पिता नशे के आदी होने, बीमार रहने या अन्य कारणों से बच्चों की देखभाल में अक्षम होते हैं। ऐसे में अक्सर होता यह है कि बच्चे खाली घर में बहुत सा समय बिताते हैं जो बहुत खतरनाक हो सकता है। एथलेटिक लीग जैसे संस्थान बच्चों को एक ऐसी जगह उपलब्ध करावाते हैं जहां वह रचनात्मक गतिविधियों से जुड़ सकते हैं। भारत में शहरीकरण, एकल परिवारों और कामकाजी माता-पिताओं की बढ़ती संख्या को देखते हुए भारतीय किशोरों के लिए भी जल्द से जल्द स्कूल के बाद के वक्त के लिए ऐसे कार्यक्रम शुरू होने चाहिएं।

जरा सी करूणा, जरा सा व्यक्तिगत प्रयास, किसी और द्वारा आकर सहायता करने का इंतजार करने के बजाय आगे बढ़कर सहायता करने का सूत्र अमेरिकी समाज में कारगर साबित हुआ है। किसी अपरिचित से कहे गए ''मिजाज कैसे हैं'' जैसे कुछ सरल शब्द पूरे समाज के मिजाज को इंगित करते हैं। ये बताते हैं कि इस समाज को अपरिचितों की भी फिक्र है। □

***रकीब हुसैन** कोलकाता में हिंदुस्तान टाइम्स के प्रमुख संवाददाता हैं।*